● **सुनो, समझो और पढ़ो :**

८. जन्मदिन

–प्रेमस्वरूप श्रीवास्तव

जन्म : ११ मार्च १९२९, खरौना, जौनपुर (उ.प्र.) **रचनाएँ :** विविध बालकहानियाँ, बालनाटक, लेख, रूपक आदि ।
परिचय : आप पिछले छह दशकों से साहित्य सृजन से संलग्न हैं ।
प्रस्तुत कहानी में पानी के महत्त्व को बताकर उसकी बचत की ओर ध्यान आकर्षित किया है ।

मैं कौन हूँ ?

* **सूचना, निर्देश, आदेश, अनुरोध, विनती के वाक्य विरामचिह्न सहित पढ़ो और समझो :**

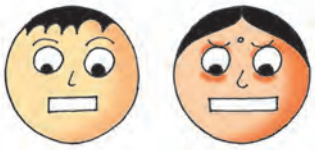

१. बगीचे के फल–फूल तोड़ना मना है ।
२. जैसे – फल, सब्जी लेकर घर आओ ।
३. 'चंदामामा' बालपत्रिका पढ़ो ।
४. अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें ।
५. बच्चों ने कहा, '' कृपया हमें अंतरिक्ष के बारे में बताएँ । ''

गरमी पड़ने लगी थी । धीरे–धीरे उसके तेवर तीखे हो चले । सूरज आग बरसाने लगा । मगर इन सबसे बेखबर बबलू अपने में ही मस्त था । उसे बाथरूम में घुसे आधा घंटा हो चुका था । शावर के नीचे उसकी धमा–चौकड़ी मची हुई थी । कभी तो वह शावर के साथ नल की टोंटी भी खोल देता । अंत में माँ को ही चिल्लाना पड़ा, ''बबलू, क्यों इस तरह पानी बरबाद कर रहे हो ?'' ''माँ, मैं ऐसा कुछ भी नहीं कर रहा हूँ । मैं तो बस नहा रहा हूँ । इस गरमी में मेरा मन तो करता है कि घंटों नहाता रहूँ । '' बबलू बोला ।

बबलू की इस आदत से उसके माता–पिता दोनों परेशान थे । वह मंजन करते समय देर तक पानी बहाता रहता । स्कूल में भी उसे अपनी इस आदत के कारण डाँट खानी पड़ती । वह वहाँ के नल की टोंटी भी अकसर खुली छोड़ देता ।

एक पानी की ही बात नहीं थी । बिजली के साथ भी यही होता । वह कमरे में न हो तब भी पंखा खुला रहता तो कभी कूलर बंद करना भूल जाता । कभी वह पढ़ते–पढ़ते सो जाता तब भी बल्ब जलता रहता । माँ को ही बुझाना पड़ता ।

पानी हो या बिजली यानी कि ऊर्जा, दोनों का भंडार सीमित है । दुनिया के सभी लोग ऐसा करने लगे तो क्या होगा ! नहाना–वहाना तो दूर, लोग एक घूँट पानी के लिए तरसेंगे ।

❑ 'चलो, मत रुको । चलो मत, रुको ।' इसी प्रकार के अन्य वाक्य श्यामपट्ट पर लिखवाएँ । उनमें विरामचिह्नों का उपयोग करवाएँ। नए विरामचिह्नों (– योजक चिह्न,—निर्देशक चिह्न,' ' इकहरा अवतरण चिह्न ,'' '' दोहरा अवतरण चिह्न) का प्रयोग समझाएँ।

जरा सोचो ..... कार्टून बनाओ

यदि पानी की टोंटी बोलने लगी.....

लेकिन यह बात बबलू की समझ में बिलकुल न आती । माँ और पापा दोनों ही उसमें सुधार लाना चाहते थे पर उन्हें कोई उपाय नहीं सूझ रहा था ।

उस दिन शीला मौसी की बेटी पूजा का जन्मदिन था । उन्होंने सबको खाने पर बुलाया था । शाम को सब उनके यहाँ पहुँच गए पर बबलू को वहाँ पसरा सन्नाटा देख बड़ा आश्चर्य हुआ । मेज पर भोजन लगा हुआ था । गुब्बारे और रंगीन झालर भी सजे हुए थे पर कमरे में बिजली की रोशनी नहीं थी । कूलर और पंखा भी नहीं चल रहे थे । केवल दो-एक मोमबत्तियों का धीमा प्रकाश फैला हुआ था । सब गरमी से परेशान नजर आ रहे थे ।

शीला मौसी ने बताया, ''गरमी बढ़ जाने से बाहर तमाम जगहों पर बिजली का भार बढ़ गया है इसलिए कंपनी ने अपने यहाँ भी आज से कटौती शुरू कर दी है। आज कॉलोनी के इस ब्लॉक में कटौती हुई है । फिर बारी-बारी दूसरे ब्लॉकों में कटौती करेंगे, इससे क्या ? हम पूजा का जन्मदिन तो हँसी-खुशी से मनाएँगे ही । ''

फिर पूजा की माँ ने आरती उतारी और मिठाइयाँ बाँटी । 'हैप्पी बर्थ डे' के बोल सभी के मुँह से निकल पड़े । धमा-चौकड़ी के बीच बच्चों ने गुब्बारे फोड़े । सभी गुब्बारे और टॉफियों पर टूट पड़े । कुछ देर के लिए सब गरमी की परेशानी भी भूल गए ।

कुछ देर बाद शीला मौसी बोलीं, ''अच्छा बच्चो, अब धमा-चौकड़ी बंद करो । सबका खाना लग गया है । आओ, जल्दी करो ।'' सब खाने की मेज पर पहुँच गए । इस बीच बबलू को बहुत जोरों से प्यास लग गई । मगर शायद पानी न होने से सभी के गिलास आधे ही भरे

हुए थे । बबलू एक घूँट में ही सारा पानी गटक गया पर इससे उसकी प्यास नहीं बुझी । फिर भी वह खाने में जुट गया । दो-चार कौर भीतर जाते ही उसकी प्यास और भड़क उठी । वह प्यास से बैचेन हो उठा । गरमी अलग परेशान कर रही थी । वह पानी-पानी चिल्लाने लगा । लेकिन पानी का जग खाली पड़ा था ।

शीला मौसी मुँह बनाकर बोलीं, ''क्या बताऊँ बेटे, इस ब्लॉक की पानी की टंकी की सफाई हो रही

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ कहानी का वाचन करें और विद्यार्थियों से कराएँ । कहानी में आए जीवन मूल्यों पर चर्चा करें । स्वयं के दो गुण और दो दोष बताने के लिए कहें । कहानी के पात्रों के स्वभाव के बारे में उनको बारी-बारी से बताने के लिए प्रेरित करें ।

विचार मंथन

।। सौर ऊर्जा, अक्षय ऊर्जा ।।

है । कोई बात नहीं बच्चो, अच्छा-बुरा तो होता ही रहता है तुम लोग खाना खाओ । अड़ोस-पड़ोस में देखते हैं, कहीं-न-कहीं से पानी तो मिल ही जाएगा ।''

लेकिन इस आश्वासन से बबलू को कोई राहत नहीं मिली । प्यास से उसका गला सूखा जा रहा था। खाने का एक कौर भी गले से नीचे नहीं उतर रहा था। वह प्यास से छटपटाने लगा । आज पहली बार प्यास का अनुभव करने से तो उसे पानी मिलने वाला नहीं था।

जैसे आज पानी को तो बबलू से अपनी बरबादी का जी भरकर बदला जो लेना था । अब तो बबलू क्या तमाम बच्चों का धैर्य जवाब देने लगा था ।

तभी एक चमत्कार हो गया । अचानक बिजली आ गई । कूलर-पंखे चलने लगे । कमरा बिजली की रोशनी से जगमगा उठा । सभी बच्चे खुशी से चिल्ला उठे ।

मगर बिजली आने भर से तो प्यास बुझने वाली नहीं थी । अंकल को भी अचानक कुछ याद हो आया। वे खुशी से बोल उठे, '' अरे बच्चो, मैं तो भूल ही गया था कि बड़े वाले पानी के कूलर में पानी भरा हुआ है ।''

अगले ही पल वहाँ का दृश्य बदल गया। कमरा ठंडी हवा से भर उठा । बच्चे-बड़े सब ठंडे पानी के साथ चटपटे भोजन का स्वाद लेने लगे । बबलू की तो बाँछें खिल उठीं । चलने से पहले शीला मौसी और माँ एक-दूसरे को देख कुछ मुसकुराए । इस मुसकुराहट के पीछे छिपा रहस्य बबलू नहीं समझ पाया ।

घर पहुँचने पर माँ को बबलू किसी सोच में डूबा दिखाई पड़ा । बबलू कुछ नहीं बोला । शीला मौसी के यहाँ जो घटना हुई, वह अब भी उसकी आँखों के आगे घूम रही थी । अपने आँगन की गौरैया की प्यास से खुली चोंच । बाहर सड़क की नाली में जीभ निकाले हाँफता हुआ टॉमी । शीला मौसी के यहाँ प्यास से सूखता उसका गला । पंखा-कूलर जरा देर के लिए बंद रहने पर बहता पसीना । बहुत कुछ । नहीं, अब वह ऐसा कुछ भी नहीं करेगा ।

''माँ, कल से मुझे आँगन में किसी बरतन में पानी भरकर रखना है ।'' माँ हँसकर बोली, ''तेरे कारण पानी बरबाद होने से बचे तब न रखें। ''

''माँ, अब पानी की एक बूँद भी बरबाद नहीं होगी,'' बबलू आत्मविश्वास से भरकर बोला ।

मगर बबलू कभी यह नहीं जान पाया कि शीला मौसी के यहाँ जन्मदिन की पार्टी में जो कुछ हुआ, वह एक नाटक मात्र था । उसे सबक सिखाने के लिए । माँ ने चलने से पहले शीला मौसी को फोन पर बबलू की इस आदत के बारे में बता दिया था । शीला मौसी ने भी कुछ करने का भरोसा दिया था । उन्होंने यही नाटक किया जो कि पूरी तरह कामयाब रहा ।

अब तो बबलू खुद भी अपने दोस्तों को समझाता है कि पानी और बिजली अनमोल हैं । इन्हें भविष्य के लिए बचाकर रखो ।

❑ प्रश्नोत्तर के माध्यम से विद्यार्थियों से पानी, बिजली आदि का उचित उपयोग कराने हेतु चर्चा करें । उन्हें इनकी बचत करने के लिए प्रोत्साहित करें । दैनिक जीवन में सौर ऊर्जा का महत्त्व और आवश्यकता समझाकर उसका उपयोग करने के लिए प्रेरित करें ।

 मैंने समझा

KKN3ZC

शब्द वाटिका

नए शब्द

बरबाद = नाश
तमाम = सभी
भंडार = खजाना
भरोसा = विश्वास
सन्नाटा = गहन शांति
कामयाब = सफल

मुहावरे

धमा-चौकड़ी मचाना = धूम मचाना

भाषा की ओर

शब्दयुग्मों की जोड़ियाँ मिलाओ।

अड़ोस	वहाना
बारी	खुशी
अच्छा	बारी
नहाना	पड़ोस
हँसी	बुरा

स्वयं अध्ययन

मातृभाषा के दस शब्द एवं दो वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करो।

सुनो तो जरा

ध्वनिफीति, सी. डी. पर कोई लोकगीत सुनो।

बताओ तो सही

तुम अपनी छोटी बहन/छोटे भाई के लिए क्या करते हो ?

वाचन जगत से

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की आत्मकथा का अंश पढ़कर चर्चा करो।

मेरी कलम से

अपने नाना जी/दादा जी को अपने मन की बात लिखकर भेजो।

* दो-तीन वाक्य में उत्तर लिखो :

१. बबलू की आदत से कौन परेशान थे ?

२. शीला मौसी ने बिजली की कटौती का क्या कारण बताया ?

३. प्यास के कारण बबलू की स्थिति कैसी बनी थी ?

४. बबलू ने किस बात को कभी नहीं जाना ?

सदैव ध्यान में रखो

प्राकृतिक संपदाओं की बचत करना आवश्यक है।

अध्ययन कौशल

*** निम्नलिखित चित्रों के नाम बताओ और जानकारी लिखो।**